

शिवारामसरोज ॥

"महात्मा शिवानन्द कृत"

जिसको

श्री १०८ मत् परमोदार धर्म पारायण प्रजापाल
नीतज्ञ सद्गुणग्राहक करुणानिधान बीरावतंस
श्रीमन्महाराजाधिराज ठाकुरप्रसाद नारा-
यणदेव बहादुर महाराजे हल्दी के

आज्ञानुसार

पण्डित बख्शराम पांडे सा० हल्दी ज़िला बलियाने
अति परिश्रमसे प्राचीन पुस्तकसे उल्था किया ॥

वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबंध से

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपी
सितम्बर सन् १८९१ ई० ॥

शिवारामसरोजका सूचीपत्र ॥

शिवारामसरोजका सूचीपत्र समाप्तम् ॥



ओ३म्

शिवारामसरोज ॥

दोहा ॥

रघुवरजी गुरुद्याल होइ दियो ज्ञान उपदेश ॥
शिवानन्दसुमिरण करो मेटो सकल कलेश १

(स्तुति प्रकरण)

एकदिवस पितुकहेउ अस शिव जो सुनहु सुधारि । हनूमान औगंगकी अस्तुति करहु विचारि १ आखर अर्थ न जानऊँ राम चरणसों नेह । शीवकहत करजोरिके पितुआज्ञा भययेह २ सूरसरी जगतारणी शिवपरहोहु दयाल । गुणगावों तव सुलभकछु मेरा मतिहै बाल ३ चन्द्रवार के पहरमें आखरकरि अनुमान्द । शीव कहत नहिं औरको मेरोगति हनुमान ४ सबमिलि होहु सहाय अब पितुव्रतकहों बखानि । सिद्धमासके चरितकछु कहेउ सकल अनुमानि ५ दीनबचन सुनि शिवको प्रगटंभये दोउआय । गानकरो रघुनाथकी ऐसेकहेउ बुझाय ६ ॥

(कबित्त—सवैया)

गंगासहस्त्रमुखी जोबही तहँ मेघघटा चहुँओर लगायो । चारारि खम्भरोप्यो तहँ जायके कुशके आसन बासबनायो । तांपर

बैठिके ध्यानधरयो हियमें सियरामहिके गुणगायो। शीवभनैरघुराज रजायसु काजभयो पितुके सुखपायो १ देखिके ध्यान डरो सुरकेपति आपुसहायक मेघपठायो। जायके वृष्टिकरो बहुभांति जहाँ तपसा वह ध्यानलगायो। शीवभनै बहु वृष्टिभई चहुँओर ते पौन झकोर लगायो। नामजप्यो जबहीं हनुमानको आयके बानते ताहि उड़ायो २ लक्ष्मणको जब शक्तिलगी तबैजाइ सजीवनमेरु उठायो। सीयको संकट फेरि तुही तव जयजयदेव मुनीशनगायो। शीवभनै अतिसंकटमें हनुमानके ध्यानधरे सुख पायो। राखिलिजे अपनो जनजानिके आश है नाम इहै गुण गायो ३ लेइ पतालगयो महिरावण लक्ष्मण रामको त्रासदिखायो। खोजभयो जब भोरभयो दलशोरभयो दोउबन्धुन पायो। शीवभनै तहँजाइ पतालमें संकट ऐसे पिताको छुड़ायो। राखिलिजे अपने जनजानिके आशहै नाम इहे मनभायो ४ वाजनको कस शोचरहे हनुमान सहाय जहाँ अधिकारो। मेघको छाँह है नामतेरो अरु पावको ओढ़न नामअधारो। बैठनको दृढ़नाम तुम्हार औ चौकिहै नाम चहूँओरभारो। शीवभनै अबहोहु सहाय दिजै शुचिज्ञान ऐपवनके बारो ५॥

दो०। गंगाजीकी गुणकथा गावनको अनुमान।
कथाबहुतमतिथोरिहै केहिविधिकरौंबखान॥
उक्तियुक्ति कछु मंत्रनहिं मेरोमति है राम।
शीवकहतसुरसरिचरित सुलभउचारेनाम॥

स०। शंकरके शिरमें जो विराजति सुन्दरनाम महाअधिकारी। भागीरथी तपजायकियो बहुभांतिन ध्यानधरयोहै बिचारी। एकसमय हरमांगकह्यो उन्ह माँगोहै गंगके नीरसुधारी। शीवभनै एकके कुलतारेको कोटिन्ह कोटितरयो नरनारी १ लैजो चले तबहीं तपसा तबकौतुक तासों कियोहै विचारी। छटिपरी करसों महिमों भयो धारसहस्र न जाय सम्हारी। तासों कहो अपयानचढ़ो वोह मारगआगे चलेअधिकारी। शीवभनै तीर्थ-

राजप्रयागमें आयकियो कछु कौतुकभारी २ कछुदिन जायरह्यो मुनिजानु तहां तेरो आशरह्यो मनलाई। द्वादशवर्ष अगोरिरह्यो तबतों बड़िभागनते पुनिपाई। काशीमें बासकियो जबआय तो देवन आयकै ध्यानलगाई। शीवभनै तहँते भृगुआश्रम आइके पापिन मुक्तिबनाई ३ तीरथ और कहाँलौंकहौं कछुकारण मोसे न जातकहाई। जायसमुद्र धसी जबहीं तहँ कौतुकियो रघुवीर गोसांई। मेरुउठाय धरयो तहँवाँ सुतसागरको जो समीप न जाई। शीवभनै कलितारणको मृत्युलोकमें गंगतरंग बहाई ४ हैसमरत्थि महाजगतारणि तेरोस्वरूप न मोसे कहाई। शीश रख्यो जाके आपुहि शंकरपर्म कमण्डलुमें सुखपाई। सुन्दरनीर बहे श्रुतिगावत शीवभनै कोउपार न पाई। कोटिक पापछुटेतव देखत नामलिये बैकुण्ठमो जाई ५ नीरपिये सुखपावतुहैं गुण गावतही सबपाप नशाई। नामसों नेहरहे दिनराति इहेकरि प्रेमदिजे मोहिंमाई। राखिलिजे पितुको प्रणसुन्दरि बूड़त है द्विज थाहबनाई। शीवभनै अबहोहु दयाल होवे दुखदूरि सबै सुखपाई ६॥

दो०। चारि दिवसलौं बैठिके सुरसरि नामसुधारि।
आइकही तब स्वप्नमें शिवजो सुनहुबिचारि॥
प्रात होत तुमजाहु अब जहां मूल अस्थान।
शीव कहत शिरनायके तब मैं कियउँपयान॥

स०। भोरहि भानु उदय जो लई तब बायस आयके बोलसुनाई। जागि उठे नरनारि तबै जबनीर समीप सभय जनआई। कोइ कहे कछु हेठ भयो निर कोऊ कहे नहिं है अधिकाई॥ शीव भनै जगतारनि गंग सबै सुखदेई सरूप बनाई॥

दो०। यहि विधि कछु सुरसरि चरित शीवाकहा बुझाय।
मेरी मति नहिं कहन की पितु आज्ञा न मिटाय॥

स०। मैंमतिमन्द दयाजगदम्बको रूपस्वरूप कहाँलौंबखानो। होगुनखानि बड़ी तुमदानि सबैतजिआश तुम्हें मनमानो। बनि

हारिसबै जनुहैकछु मोरभरोससो आपनिनाहिं ठिकानो। शिव भनै शरणागतकी पतिलाज तुम्हें अबमें नहिंजानो १ देवमुनी गन ध्यानधरे सबगावतु हैं मुनि चातुरज्ञानी। जाको कृपाकरि हेरतुहौ तेहि दीन्हसबै सुखकी यशखानी। जोयशगावत सोफल पावत तासों सदाजो रह्यो शुभजानी। शीवभनै कर जोरतुहौं अबहेरु कृपाकरि आदि भवानी २ संकट आइपरे जनको तब खड्ग उठायके धावतिरानी। दुष्टकोमारि निपात कियो जनको सुखदीन्ह बड़ी तुमदानी। मेरोतोएक अलंबतुही गति औरसो मेरोमनो नहिंमानी। शिवभनै करजोरि तुम्हें अबहेरु कृपाकरि आदिभवानी ३ एकसमय हरिशयनकियो तुमबैठिरही गुनगावत बानी। ताक्षण ब्राह्मण आयगयो तुमरी महिमा बहुभांति बखानी। बिष्णुके कानते दैत्यभयो तेहिको मधुकैटभ नामधरानी। शिवभनैतेहि औसरकी कछुधर्म दशानहिं जायबखानी ४ धायो है कोपिके दैत्यजबै तब शंककिये विधिको तुमजानी। ऊठिके खड्ग सम्हारिलियो तेहिमारनको मनयुक्तिजोआनी। जंघसुमेरु सो कीन्होजबै तब ताहिते ताको बिनाशेव आनी। शिवभनै करजोरि तुम्हें अबहेरु कृपाकरि आदि भवानी ५॥

(ब्रह्मनिरूपणप्रकरण)

तिथिद्वारा॥

दो०। तिथिसो तत्त्व निकारिये जोगुरु आयसु होय।
शिवानन्द सत संगसो पावै बिरला कोय॥

चौ०। परिवा एक न दूसर कोय। रहाएक अविनाशी सोय॥
द्वितिया द्वंद भयो अतिभारी। महिमहँजलथल आतमधारी॥
तीजि तत्त्व उपजी एक आय। इच्छा शक्ति भई सो जाय॥
तेहि इच्छा से सब कछु भयो। ब्रह्मा विष्णु शीव निर्मयो॥
चौथि चारि तब वेद बनाई। चारि मारि गुरु दीन्ह बताई॥
पढ़ै गुंने प्रभु की गति पावै। नात मूढ़होइ जन्म गँवावै॥

पंचमि पांचो तत्त्व प्रकाश। क्षितिजलपावक पवनअकाश॥
छठि छठयें वहरहे निरारा। पांच तत्त्व ले जग विस्तारा॥
सतयेंसुरति सोहागिनि कीन्ह। मनसामी तिनके संग दीन्ह॥
अष्टमी अष्टकमलमो रहा। रघुबरनन्द दयाकरि कहा॥
शिवानन्द यह बूझ बिचारी। भवसागर को यही पसारी॥
नौमी नव द्वारा को गेह। लगी पचीस प्रकृति सो देह॥
दशमी दश द्वारा होय जाय। उलटा प्रभुमो रहा समाय॥
दशमी जब परिवामो मिला। भयउएकादश प्रभुकोखिला॥
द्वादश दया भयो तब आय। दम आधार सो ब्रह्म कहाय॥
आपुहि आपु न दूसर कोय। जो यह शब्द बिचारे कोय॥
तत्त्व संधि त्रयोदश भयो। डगे न तत्त्व आपुमों गयो॥
अवर चतुर्दश चिन्ता छूटे। अष्ट कमल ऊर्ध्व सो फूटे॥
पूरण चन्द्र देखु तहँ आय। तारागण तहँ गनि नहिं जाय॥
तीनि उपर जब सीना धरा। भयउ अमावस तव अटकरा॥
तीनि अंक जब दिया मिटाय। रहा शून्य कछु कहा न जाय॥
अंक बिमुख शून्य कछु नाहिं। लगे अंक तब लेखा माहिं॥
एक एक दश दूसर होय। तिसरे सहस कहावे सोय॥
चउथे दश सहस्र होय जाय। पँचयें लाख जो एक कहाय॥
छठवें शून्य धरे जो कोय। लाख दश तेहि लेखा होय॥
सतवें शून्य आनि जब धरा। कोटिं एक को गिनती परा॥
आठ शून्य दश कोटि कहाय। भयउ अरब जब नववें आय॥
दशवें शून्य धरो जब जाय। औ दश अरब गनो अधिकाय॥
शून्य एकादश को जब धरा। खरब एक को गिनती परा॥
द्वादश शून्य धरो जब जाय। औ दश खरब गनो अधिकाय॥
तेरह शून्य को पदुम कहावे। औ दश पदुम चतुर्दश आवे॥
पन्दरह शून्य को भयो प्रवेश। गनों कहां लों है निरभेश॥
कहों अन्त जब गनि न जाय। षोडश शून्य अखिल लखाय॥
सब को नाम धराये एक। भेंटे एक नहिं लेखा टेक॥

एक एक शून्य मेटो जबहीं। लेखा घटे थोर भये तबहीं॥
सकल शून्य जब देय मिटाय। रहा एक कछु कहा न जाय॥
यहिबिधि षोडशपुरुष निरमयो। ताको सखा बहुतबिधि भयो॥
लेखे पढ़े मिटावे कीन्ह। शिवानन्द जानहिं जनलीन्ह॥
जो यह लेखा पढ़े पढ़ावे। ताको संशय ना कुछ आवे॥
दो०। शिवानन्द जिहि गुरु मिला सो यह लेखा जांन।
बूझे सूझे पार भव जिन निश्चय हियमान॥
अंक सगुण गति जानिये सूना निरगुण होय।
शिवानन्द सरगुण बिना निर्गुण लखे न कोय॥

(राशिद्वारा निरूपण)

दो०। श्री गुरु देव सहाय भौ बुद्धि दया करि दीन्ह।
शिवानन्द यह राशिको मने ठिकाना कीन्ह॥

चौ०। मनहै मेषबृषभमोपरा। भया मिथुनमो बहुबिधिभरा॥
काम क्रोध करकटसों होय। संशय सिंह लगी है सोय॥
काया कन्या को नगर सिधाये। तूला तत्त्व लगी तेहिजाये॥
वृक्ष बैर बैठे तेहि छांह। धन धन्वा लागी तेहि मांह॥
मकर मोह ममतामों परा। कुम्भकरणमों निशिदिन भरा॥
कछू न कबहुँ मीन ह्यो जाय। पाप नीरमों रहा समाय॥
जो गुरु ज्ञानी केवट होय। मन माछरि को पकड़े सोय॥
मनको मेख गाड़िये तहां। गंगा यमुना संगम जहां॥
छोड़ जंजाल बड़ो महजाल। बुद्धिबिसारीलेक अरु ख्याल॥
इंगल पिंगल को करु बास। ज्ञान गुरूले चहुं दिशिपास॥
तब वह मीनहिं पकड़ो जाय। सुखमनि छोरी धरो बनाय॥
छांडि नीर तब आग्निहि परा। छनछनात है जो निरभरा॥
सुखे नीर तब मिट्टी भई। जल को अंश छीन है गई॥
नाम स्रवन जब लागे जाय। शब्द स्वाद मों रहा समाय॥
ऐसें युक्त करे जो कोय। तब यह राशिमें रावा होय॥

शिवानन्द यह बिरला जाने। जेहि गुरु मिले सो सांचीमाने॥
साधे सिद्ध सकल दिश होय। राहु केतु ग्रासे ना कोय॥
शनि शूक्र गुरु बुद्ध होय जाय। सोम सुरज मंगल अधिकाय॥
शिवानन्द गुरु पंडित होय। जो यह भांति बिचारे कोय॥
ताको सर्बकाल सुखकारी। निर्भय रहे न संशय धारी॥

दो०। द्वादश राशि बिचारिके साहब एकै जानि।
मीनमेषजवामिलगयो शिवानन्दसुखखानि॥
अद्राभद्रा ग्रह सकल बिघ्नकरे नाहिं कोय।
शिवानन्दतेहिसकल सुख जाघट ऐसी होय॥

(अजपा प्रकरण)

तोमर छन्द॥

गुरु दीन्ह मोहिं लखाव। सिख कहत हों यहभाव॥
जहँ मूल चक्र निवास। तहँ कियो गनपति बास॥
है शक्ति ताको संग। तहँ कमलअरुणो रंग॥
है चारि दल तेहि पत्र। सब पास जहँ ताकियत्र॥
तेहि सेउ मनचितलाय। होय बुद्धि निर्मल जाय॥
सो जपहिं छंवसे नाम। यह जानु शिवाराम॥
है ब्रह्म आगे बास। तहँ कमल षटदल बास॥
है ब्रह्म शक्ति संयुक्त। शिवनन्द यह मतिगुप्त॥
षटसहस अजपा जाप। नरें जानिभौ निष्पाप॥
दशकमलको जहँ पात। तहँ बिष्णु दीन्हो लात॥
वामार्ग शक्ति संयुक्त। जेहि जगतभयो है मुक्त॥
तहँ सहसषटहोयजाप। गुरुगम्य जानु प्रताप॥
है गरुडवाहन ताहि। यहु चक्र आगे वाहि॥
तेहि सेइये बहुभांति। दे पुष्प तुलसी पाति॥
दलका दलो है लागि। तहँ शम्भु देखो जागि॥
है उमा शंकर बास। बामांग शक्ति निवास॥

त्रैशूल बैल बिराजु । षट सहस अजपा राजु ॥
है षोड़शादल जाहि । रह प्राण पति तेहि पाहि ॥
तहँसहस अजपाजानि । गुरु शब्द सांचे मानि ॥
दल दोइ लागे जाहि । तहँ हंस बासा चाहि ॥
एकसहस अजपा जानि। गुरु शब्द सांचे मानि ॥
जहँ सहस दल हैकमल । तहँ परम गुरुको अमल ॥
तेहि सेइये मन लाय । जहँ शब्द भेदी पाय ॥
यह जाप अजपा भांति । नरकरहु दिनअरु राति ॥
करु शिवानन्द बिचार। तरौ तू भौ जलपार ॥

दो० । तम पाबित्र अजपाजपे मन पबित्र गुरु ज्ञान ।
शिवानन्द सूरतिलगी निर्गुण को गति ध्यान॥

(ककहराप्रकरण)

दो० । कया कनकगढ़ शोधिये कुशल कालसो सोय ।
करुणासिंधु केशवकहे काम सफल सबहोय १

स० । कन्त कयामहँ कान्हरहे कबहूं नहिंनेह कियो मनमेरो । काहकहो करुणामयकी गति मोसन कूर कपूतहि हेरो । कै सतसंगमें रंगरचो रसलायके नाम निरंजनकेरो । पारभयो भवसागर सो शिव मोहिं जबै करुणानिधि हेरो १ ॥

दो० । खरचखात तोहिं खबरि नहिं खेहहुये सबजात ।
शिवानन्द येखसमबिन खाक अवरि सब बात २

स० । खोलुतैं ज्ञान रुपानलै सत्यको मोहमयारिपु मारिबिडारो । शील सन्तोष लियेरहु तैं अरु तर्क कुतर्क सबैतुमजारो । नेह करो यदुनन्दनसों दिनजात बितो परलोक सुधारो। शविहैपीव जो अन्तरमो लखि है तिन्हई जिन्ह ज्ञान बिचारो २ ॥

दो० । ज्ञानगारुडी मंत्र है जो गुरु फूंकाहोय ।
छुटेमोह संशयसकल सरस सबन्हते सोय ३

स० । गानकरो गुणगोविंदको गुरुज्ञानको ध्यानधरोमनमेरो ।

गाहक है गुनको जो सदा तेहिको मन तू अभिअन्तर हेरो। शुन्य समाधि अगाधि बडो नहिं पुराय न पाप जहाँ हरिडेरो। शीव स्वरूप कहाँलोकहे जलमें थलमें नभमें प्रभुहेरो ३॥

दो०। घायलहों गुरुज्ञानको घर बन कछु न सुहाय।
रघुबर नन्ददयाल होइ दियो नाम बतलाय ४

स० ।घूँघटखोलु घरेमहँ कन्त बिना सतसंग न बूझिपरोरे। पावेनपार अथाह महा गुरुज्ञान बिना नर बूडिमरोरे। नामको नाव बनायदियो गुरु ताचढ़िको भवपार भयोरे। लागी न बार उतारतपार कयाकिनहार को शीव गहोरे ४॥

दो०। ऊंचो ऊंचो देखिके तुमतो भूल्यो जीव।
नीचहोय नहिं नामजप्यो किमिपावहुगेपीव ५

स०। उत्तमनाम निरंजनको अघगंजन है हरिसन्त सहाई। है सबको अभिअन्तरमों लखिहेत सोई जिन्ह मारगपाई। शारद शेश महेश गणेश गरूरते खोजेहु पारनपाई। पायो है प्रेम अजामिल गिद्ध भयोपरसिद्ध यहै सतभाई ५॥

दो०। चरचाकरु हरिनाम की चिन्तारहे न कोय।
शिवानन्द चितचपलहै थीर कवनविधिहोय ६

स०। चेतन चित्त है थीर सदा जिन्ह केवल कृष्ण हियेमहँ हेरो। मोह मया मनकी ममता मिटिजात सबै जगतेजनकेरो। शोचबिमोचन हो रघुनाथ अनाथहै शीव कहो प्रभु मेरो। कूर कपूत कुरीतिलिये सब एक भरोसो गोबिन्दहि तेरो ६॥

दो०। क्षमा छांहमें बैठिके गुरुगमि ध्यान लगाव।
शिवानन्द तब हरिमिले जब निश्चय ह्वैजाव ७

स०। छांह बडोहै निरंजन नाम जपै गनिका गंज गिद्धतरो-रे। भारउतारनको महिमें हरि रूप स्वरूप अनेकधरोरे। रावन को प्रभु पावनकै लखिभाव बिभीषण राजदयोरे। सो हरि हेरु हिये महँ शीव तू कंचन छांडि न कांच लयोरे ७॥

दो०। जक्त जात जागे बिना मोह निशा में सोय।

शिवाराम हरिनाम बिनु जन्म देतुहै खोय ८

स०। जा जनको हरिनाम लगो तिन्हको दुसरो रस रंग न भावै। केशव कृष्ण गोपाल कहै कबहूं सुरसों हरिको गुणगावै। भाव सुभाव सभेसन नेह कहै कछु बैन तो राम बतावै। शीव भनै अस साधुजनो भव आपुतरे सँग और तरावै ८॥

दो०। झकत झरोखे बैठिकै झलक कही नहिं जाय।
शिवानन्द जाते जगत ताको कहा बताय ९

स०। झालकी झांझ परी हियमों पियकी सुधिलेनको आतुरधाई। मारग है अवगाह बड़ो जिनको गमको सनकादि न पाई। सूरति नारि पियारि बड़ी गुरु शुन्य समाधि को पंथबताई। नाम निरंजन नेह लगी तब शीवसनेह स्वरूप समाई ९॥

दो०। ईश शीशते रोम तक खोजु सनेह बढ़ाय।
शिवानन्द सो धन्य है जो जन भेटोजाय १०

स०। इंगलतेगति पिंगलकी सुखसाधितबै सुखकोमनिपाये। सूक्षम भोजन सात्विक अन्न अनेकप्रकारके ताहि बनाये। ताभखिके सुरसाधि निरन्तर नेम निरंजन नेह लगाये। नहिं पार भयो भवसागरसे कोउ शीव बिना गुरुज्ञान बताये १०॥

दो०। ठाटटेकु हरिनामकी टेक दूसरी नाहिं।
शिवानन्द तब हरिमिले हेरत नरहियमाहिं ११

स०। टेरिसुनो हिय भेरिकोबाजन बाजत शब्द अनन्त अलेखो। सन्तसहाय भयो जिन्हपै तिन्ह पायो है नाम पदारथ पेखो। टारिकै मोह महारजनी सजनी हिय ज्योतिभई प्रभु देखो। शीतल सात्विक सत्त सँभारत शीव स्वरूप बना असभेखो ११॥

दो०। ठाटकरो सतसंगकी ठाकुर ठावँ ठिकान।
ठहरिरहहु तुमठावँपर शिवानन्द मनमान १२

स०। ठाकुर ठावँ ठिकानबड़ो ठहरात नहीं कबहीं मन मेरो। औघटघाट अथाह बड़ो कहुं सूझिपड़े नहिं पंथ अँधेरो। जोगुरु

ज्ञान मिले अभिअन्तर होतप्रकाश प्रबोध बसेरो। शिव समाधि है शुन्य जहां तहँ आपु बिराजत ठाकुर तेरो १२ ॥

दो०। डगडगात डोलत फिरत डारत विरह विकार।
शिवानन्द जब पिवमिले तब सुख अगम अपार १३

स०। डाहतहै तन तामसहेतु ढहे कछु हाथलगे नहिं तेरो। कन्त कयांमहँ केलिकरे तोहिं सूझिपरैन भयो है अँधेरो। मोह मया मनकी ममता मत स्वारथ शोचलगो मनमेरो। नाम निरंजन नेहलगे कहै शीव सबै बिषयामतजेरो १३ ॥

दो०। ढकीबस्तु बहुकालकी सो गुरुदियो उघारि।
साहबसों परिचैभई शीवाकहै बिचारि १४

स०। ढूंढ़त ढूंढ़त अन्तनहीं है अनन्तमहा कोउ पार न पावै। शारद शेश महेश गणेश दिनेशलगे निशिवासर गावै। सोहरि हेरु हिये महँरे नर काहेको युक्ति अनेकबनावै। शीवभनै सुखमाहिं मिले जब काहेको नीचसों कीच में धावै १४ ॥

दो०। तत्त्व तहांलगि जानिये जहां न विद्या वेद।
एकअलख निर्बानहै सन्त लखहिं वह भेद १५

स०। तातन मातन तामस देहको कामनवाम कोऊ सँगजैहै। एकअलेखहै रूपमहानर सेवत ताहि सबैसुख पैहै। कै एकबार बुझाइकहौं मन रामभजो कोउ काम न ऐहै। शीवस्वरूप लखो हरिको नतु मर्कटसे यम तोहिं नचैहै १५ ॥

दो०। थकित थीरपायो नहीं थहरानोहै जीव।
शिवानन्द तब सकलसुख जब घरआवे पीव १६

स०। थीर भयो मनपीरगयो सतसुन्दर कन्त कयामहँभेटो। मोह मया मनकी ममता दुख द्वन्द व फन्द सबै जगमेटो। पायो पदारथ चारि तहां गुरु ज्ञान दयाकरि दीन्ह चपेटो। होत प्रकाश अकाश सुखै कहै शीव सबै रस रंग लपेटो १६ ॥

दो०। दया दरद दरवेश है दिनानाथ हित मोर।
शिवानन्द दुखदलनप्रभु यादवनन्दकिशोर १७

स०। दान दयो गुरुनाम निरंजन तासन नेहलगो मनमेरो। सूरमयंकभयो एकठावँ त्रिवेनिहिजायके संगम हेरो । छूटिगयो मनकी ममता गुरु ज्ञान गही भवसागर बेरो। पारभयो कंनहार कया करि शीव स्वरूप लख्यों प्रभु केरो १७ ॥

दो०। धन्य सभा सतसंग की संशय सकल नशाय।
धोखा धन्धा जक्त की शिवानन्द मिटिजाय १८

स०। ध्यानप्रमान कहे सबकोय जपेशिव जाहि सदामनलाये। ताहि बिसारि कहां मतिमन्द फिरो जगमो विषयारस खाये। प्रेमकरो धरनीधरसों मिटिहै सबदोष तिन्हें गुणगाये ।कोटिन्ह पातक पुंजनशै कहेशीव जबै सतसंगके पाये १८ ॥

दो०। नानानर संसारमें नेमकरे सबकोय।
नामनेह नारदजपै शीवालेहु बिलोय १९

स०। नाहक गर्वकरो मनते यहगर्व नहीं कछुकाज तिहारो। गर्वगयो हरिणाकुश कंशभयो बिनुबंश पलंक विचारो। सन्त सहाय करोजो सदा प्रहलाद बिभीषण राजसुधारो। सो हरि हेरु हियेमहँ शीव सहाय सदा यदुनाथ तिहारो १९ ॥

दो०। पापपुण्य संसारमो प्रगटजानु सबकोय।
जाकोमन जेहिते लगे शिवानन्दसो होय २०

स०। पापन पुण्य न सन्तसभामहँ पूरणब्रह्म प्रताप बिचारो। जीव दया उन्हके जिवमो जगजीवसभै गुरुदेव हमारो । शीतलभाव सनेहसभै मनमोह मयाममता मदहारो । पारभयोभव सागरसों कह शीव जिन्हो नररूप सँवारो २० ॥

दो०। फैलिरही संसारमों कर्म भर्मकी फास।
शिवानन्द यह जन्तुसब मनते तजै नआस २१

स०। फांसछुटे जगआसमिटे जब एकस्वभाव सबैसन राखे। शत्रुन मित्रन पुत्र कलत्र न रामस्वरूप सबै जगभाखे। सन्त सभासन नेहकरे हरिके गुननेम निरन्तरचाखे। शिवभनै अरविंदसुपातसों पाप न पुण्य शरीरहि माखे २१ ॥

दो० । बिलग बैर बिलगाइकै भजोराम जियमाहिं ।
लोक लाभ परलोक सुख शिवानंद है जाहिं २२

स० । बादिहि जन्मगयो बकवादि में राम रमापति कोनाहिं गायो । पूजत पाहन प्रेमकियो कछु यंत्र व मंत्र सुतंत्र दृढ़ायो। आपु बिसारत चेतनहीं शठसों हठहेतु कलेशबढ़ायो । शीवभनै फल नारुनिसे अति सुन्दरहै कछु काम न आयो २२ ॥

दो० । भरमिभुल्यो संसारमें भाव बिना हरिनाहिं ।
शिवानन्द बसि भावको पावतहै हियमाहिं २३

स० । भक्तिकरो भगवन्तको भावसों भोरभये पछतावकरोगे। भीरपरी यमदूतनकी जगके सुख स्वारथ भूलिपरोगे । नेहलगावहु बेगि तूनाहसे नाम बिना नर बूड़िमरोगे । केशव कृष्ण गोपालभजो हिय नातो कृतान्तपै नाकदरोगे २३ ॥

दो० । मणि माणिक मुक्तामहल माया सकल स्वरूप ।
जौहरि हृदये भवनकरि शिवानन्द बहुरूप २४

स० । मोहमया ममकी ममता जगलागिरही चहुँओरसोभाई। स्वारथहेतु सचेतफिरो परमारथको कबहूं नहिंधाई । पूरणब्रह्म बसै घटभीतर जासुप्रताप सबै जगछाई । शिवकहै पियनेहकरो तेहिको मनते तू दियो बिसराई २४ ॥

दो० । युक्तिकियो यदुनाथबिनु जगसुख स्वारथ हेतु ।
शिवानन्द यादवबिना चलाजात दिन चेतु २५

स० । जगमें जबते तुम जन्मलयो तबते दुसरो कछु तोहिंनभायो । स्वारथहेतु सचेतफिरयो ममता मद मोह मया सबछायो। ज्ञान न ध्यान न योग दया नहिं सन्तसभा हरिको गुणगायो । शीवस्वरूप न बूझिपरै वहरूप बिना सबरूप गँवायो २५ ॥

दो० । रामराम रमि रहहुमन जरा मरण नहिं होय ।
शिवाराम कहे राम बिन रस न लहे जगकोय २६

स० । रामहिराम कहोनररे तुम औरसबै जगकाम बिसारो। रामहिते मुनिकीपतनी पतिलोक गई यह ज्ञानविचारो । राम-

हिते गजगिद्ध अजामिल प्रारभयो सुरलोक सिधारो। कहेशीव है राम रमेसभमें प्रगटे तहँवा जेहिजानि पुकारो २६॥

दो०। ललकि लगो लालनपयो लाह जक्तकी सोय।
शिवानन्द लालनमिले ललित सबनते होय २७

स०। लाखनमों कोइएकहै लाल जिन्हें ललना लवलागि गयोरे। सोजगमों यशवन्तभयो जपिनाम निरंजन नेहंकियोरे। मोहमया मनकीममता मद्सन्त सभासन दूरिगयोरे। शिवजो पीव मिलेनरको परयास बिना भवपार भयोरे २७॥

दो०। वहमोसब वह सबनिमो चीन्हसकै नहिंकोय।
शिवानन्द जिन्ह चीन्हिया वह ताहीको होय २८

स०। वाकोस्वरूप कहांलोंकहों कछु भंगनरंग न भूप भिखारी। एक अनेकभयो जगमों सबमों वह आपुजो खानिहैचारी। चेतनचित्त भयोजहँवा प्रगटे तहँ आय भयो गिरिधारी। राखत लाज सदा जनकी कहेशीव मेरो एकदेव मुरारी २८॥

दो०। संशय सकल निवारिये सत्यलिखा सो होय।
शिवानन्द यह समुझिके बुधजन लेत बिलोय २९

स०। शान्तिस्वरूपहै साहबकी सरवज्ञसदा सभमों अधिकारो। शारदशेश गणेशलगे सनकादि सदागुनज्ञान विचारो। लोक त्रिलोकहुसे वह लोकतहां नहिं भिन्नहै एकपसारो। शीव अनेकते कामनहीं तेरो साहब एकते एकहै प्यारो २९॥

दो०। खसम खबरि जब होतहै खसे नीर बहुभांति।
खासाखड्ग खासीमहल खालसंग नहिंजाति ३०

स०।खाल्कीजालमो हंसरहे गुरुदेवबिना तोहिं कौनबतावै। जापरआपु सहाय निरन्तर खोजत सन्त सभामहँ पावै। खूलि गयो गुरुज्ञानको मारग देखिपरी पिय दृष्टिलगावै। शीवमिले भरि अंकमोंजायके साहब शोकको दूरिबहावै ३०॥

दो०। शीतल भौ साहबमिले सुन्दर श्याम शरीर।
नीर भवनमों भ्रमरहोइ निरखोशीव गँभीर ३१

स०। सामने श्वेत ध्वजाफहराति व बाजतताल पखाउज बीना। नाचतिनारि सोहागिनि सूरति नेहलगो जिमिनीर सो मीना। होत कोलाहल रंग अनेक लगो मनजाय होखेनहिं भीना॥शिवसमायगयो तहँवाँ जहँआपु विराजत नाथप्रवीना ३१॥

दो०। हानिहारि हंकारमों हाथ लगे नहिं भेव।
हरिहरि जपि हरिआपुमें बालमीकि शुकदेव ३२

स०। हेनरमूढ़ हेरो अभिअन्तर हंसको हेतुहिये पहिचानो। राम रमे सबके उर अन्तर राममयी सिगरे जगजानो। हानि सोई जेहि राम न जानत हेतु सोई जब रामबखानो। शिवगहो शरणागत सन्तको अन्तहै राम इहे मनमानो ३२॥

दो०। छत्रछांहहै रामको छाजत सबपर वोय।
शिवानन्द वह एकहै कहन सुननको दोय ३३

स०। क्षेत्रबड़ो नरको तनुहै यहते जप योग समाधिलगैरे। पूरणब्रह्ममिले अभिअन्तर कारजऔर अनेकसरैरे। ज्ञानगुणाकर बुद्धि भई यह अंगको संग सबै जो बसैरे। शिवकयाकरतूति बड़ी करतार बिना नहिं काम बनैरे ३३॥

दो०। ये सब कया बिचारिकै करताके गुणगाय।
शिवानन्दबिनुश्रमहिंनर भववारिधितरिजाय॥
ज्ञानिनको गुरु ज्ञानहै रसिकजननकहँ खेलि।
शिवानन्दजिन्ह बूझिया भवसागर गे हेलि ३४॥

(बिनय कवितावली)

स०। शंकरध्यान लगावतहैं जिनके भजहूंलगि पार न पाई। शारदशेष सहस्त्रमुखे युगकल्प बिते बहुभांतिन गाई। शीव चह्यो गुणगावन को मतिमन्द न जानत नाम कन्हाई। पार लगावनहार प्रभू नतो लाज तुम्हें रघुबीर दोहाई १ नाम चह्यो गुणगावनको मति थोरिहै मोरि न जानेउँ भाई। मूढ़ अगूढ़ अथाह समुद्र सो चाहत पैरिके पार लगाई। होयरूपां

जगामगि रंग सबै बिनु रूप स्वरूप अनेक धरैजू। शीवसहाय जबै गुरुदेव तबै वह रूपहि रूप मिलै जू १४ ज्ञान न ध्यान न योगकृपा नहिंमान पुरानन साधक बेरो। तत्त्वन त्याग न ज्ञान बिराग न साधु समाज कबैनहिं हेरो। हौंअपराध भरों सबही बिधि नाम भरोस हिये महँ मेरो। राखिलिजै भवसागर सों कहे शीवदयाल गोपालहै नेरो १५॥

कबित्त—केशअति कारो मधुप सते बिचारो अति सुन्दर चरारो निज मातुन्ह सवाँरोहै। भृकुटीसुढारो मुखइन्दु समबारो कोई कहत बिचारो चापमनमथ हारोहै। नासिका सुधारो शुकलोलपक्षि हारो कठसुठि ठहरारो दशरत्थके कुमारोहै। शिवानन्द प्यारो एक नामके अधारो शुभलोचन तिहारो दुख मोचन हमारोहै १६ फूलन्ह के हारो बिचमोतिन्ह के लारो कलु चन्दन सँवारो उर सुन्दर पटारो है। पीतअति ढारोपद केदलीके बारो कटि किंकिणि झनकारो सबजन हियहारो है। जंघयुगढारो पदकंजरतनारो सबसन्तन अधारोमत याही लोबिचारोहै। शिवानन्द प्यारो एकनामकोअधारोशुभ लोचनतिहारो दुखमोचन हमारो है १७ पायोगुरुज्ञान मिटोहियको गुमानमन रामनाम गान कछुध्यान सरसनते। इंगलासमेटि पुनि पिंगला सोनेहकियो सब सुखपायो उनमूनी परसनते। उन्मुनीसुधारो छबिपूरणनिहारोस्वर सूरतिबैठारोचन्द्र सूरगरसनते। शिवानन्द प्यारो शून्यलोकहि निहारो अति परसन्नभयो मन ज्योति दरशनते १८॥

स०। शिवराम समागम सन्तनको भगवान स्वरूप देखो हितु है। जो जगजीव जहांलगिहै सब राममई यहि भावतु है। तापर एक अनूप है रूपलखो गुरुज्ञान प्रभावतु है। जस चूमकलोह भयो हेम आय तोना पुनि लोह कहावतु है १९ जिनने एक ब्रह्मबिचारकियो तिननेम अचार किया नकिया। जिनके त्रिकुटीजल नीरबहे तिन और नहान किया न किया।

जेहि जीवदया अभि अन्तरमों तिन्ह औरदया जो किया न किया। शिवनन्द गुरू हिय जाहिबस्यो तब औरको संग किया न किया २० जिन्हके हियज्योति प्रकाशभई तेहि औरप्रकाशभया नभया। जिन्ह सूनोहैशब्द अनाहदको तिन्ह औरजो शब्दभया नभया। जिन्ह देखोस्वरूप महाप्रभुको तिन्ह औरस्वरूप भया नभया। शिवनन्द सहायभये गुरुजो तेहि और सहाय भया न भया २१ जिन्ह जापको आसकरी अजपा तिन्ह औरजु जाप किया न किया। जिन्ह नामको दामदयो जनको तिन्ह और जु दान दिया न दिया। जिन्ह आतममो हरिपूजतुहै तिन्ह ईंटपषान लिया न लिया। शिवरामभजो जिन्ह रामलला तिन्ह औरको नाम लिया न लिया २२ जिन्ह आसन एक कियो महिमें तिन्ह तीरथ और किया न किया। जिन्ह वर्त एकादशीनेम किया तिन्ह औरजुवर्त किया नकिया। जिन्हनीर गंगाजलपान किया तिन्ह औरजु नीरपिया न पिया। शिवराम स्वरूप लख्यो गुरुको तब और स्वरूप लिया न लिया २३ निरगुणनाम निरक्षरहै एकअक्षर आनिधरो हियमाहीं। ज्ञानगुरूकहँ जोरकियो तव डंकभयो है तिहूँपुरमाहीं। कामव क्रोधजो लोभ मया मद्र मोह मया सब दूरि बिलाहीं। जो भवसागर पारचह्यो शिवरामसो अक्षरहै तोहिंपाहीं २४ सूरतिसों पहिंचान लिजै वहमूरति नाहिं कछू दरशाहीं। कोटिन्हरंग रंगे क्षणमों जलको थलको सबरूप देखाहीं। तासन नेहकरो अभिअन्तर काहेको भूलिरहो मनमाहीं। कोटिन्ह और उपायकरो कहै शीवए ए जीव कृतारथनाहीं २५॥

(दोहावली)

बानाबांधो नामका सबबाना बनिजाय।
शिवाराम बिनु नामको बाना सकल बिलाय १
बानाबल जगमोंफिरे ताना तानि तनिपाय।

जब आनि हिसाब परेगोरेमन चलो अकेल न तेराहै।
कहे शिवाराम प्रभु० ३॥
बालगयो अज्ञान ज्ञाननहिं लोगकहे सबमेराहै।
भयो ब्याह सबभूलिगयो तब कहै नारि घरतेराहै॥
फिरत जक्त बिसराय नामकहँ स्वारथही कहँ हेराहै।
कहे शिवाराम प्रभु० ४॥
कालबडो परचंड ज्वालहै सबै मारिको फेराहै।
योगी जंगम तपी संन्यासी मौनसाधि जिन्हहेराहै॥
निश्चय ज्ञान हिये नहिंआयो परघोजाय सबधेराहै।
कहे शिवाराम प्रभु० ५॥
मूलचक्रको ध्यानलायले स्वाधिष्ठान सुहेलाहै।
मनिपूरक जब दृष्टिपरेगो अनुहारि सो खेलाहै॥
चक्र बिशुद्धहि जानुनीकहै अज्ञानहिं तबहेलाहै।
कहे शिवानन्द साहेबहै आगे तहँ साधुनका मेलाहै ६
उन्मुनियापर सुरति लाइले ऊर्द्धअंगमो तेराहै।
चलो ईंगला साधि सबेराजाय पिंगला हेराहै॥
सुखसागरको सार सुखमना ताहि प्रेमकरि घेराहै।
कहै शिवाराम चलु बंकलालगहि शून्यभवनमो डेराहै ७
बाम इंगला दहिन पिंगला दहिन सुखमना सारोहै।
चलो मार्ग वह पौनसाधि तहँ चन्द्र औ सूर बिचारोहै॥
जब ब्रह्मआयकै मिलो एकपथ शून्यसमाधि सिधारोहै।
कहै शिवानन्द यहयुक्ति बांधिके तब वहज्योति निहारो है
कहाँकह्रौ वहाँकी शोभा रसना एक हमारो है।
शिव सनकादि व्यास नारदमुनि शुकदेवादि बिचारोहै॥
शारद शेश गणेश आदिको अगमदेखि सबहारोहै।
शिवानन्द मतिमन्द तासुछबि कैसोकरे बिचारोहै ९
गुरूप्रताप साधुकी संगति बेदहु बडो उचारोहै।
सो प्रताप मोहिं ऊपरआवो तबवह भेद सुधारोहै॥

रंग रंग भासे बहुवामें कोटि भानु छबिहारोहै ।
ताहि बिलोकि मग्नहोय बैठे शिवानन्द सो प्यारोहै १०

(कुण्डलिया)

जबलौं पिय परिचै नहीं तबलौं यहि तनदाहु ।
वेद उक्ति जो कर्म सब पूजा सूक्षम खाहु ॥
पूजा सूक्षम खाहु तबै देवन आराधो ।
तीरथ सकल अन्हाय बहुतबिधि आसनसाधो ॥
शिवाराम बिनु राम अन्तनहिं होत निबाहू ।
वाको नेमहै प्रेम पीव पग निति निर्बाहू १
जब पियसों परिचयभई धोखासकल मिटानु ।
गवन रातिको रवनजो तैसे यहसब जानु ॥
तैसे यहसब जानु अन्त फीकी होइजाई ।
ऐसो यश औज्ञान कहा बहु मुनिन्ह बताई ॥
शिवाराम हैराम कथा अन्तरगति जोई ।
जेहि गावत त्रिपुरारि शेष सनकादिक सोई २
ज्ञानीकी गति पवनसो सबमोंरहे समाय ।
वाक़ो ग्रहणकरे कवन सकल रसनको खाय ॥
सकल रसनको खाय ताहि चीन्हे नहिं कोई ।
वाही गतिसो चलैज्ञान गुरु पूरा सोई ॥
शिवाराम यह काम बड़ो सन्तन सबगाई ।
जहां त्रिकुटिको मध्य ताहिमों रहेसमाई ३
योग युक्तिमत सन्तकी सदारहे लवलीन ।
भेदभाव भगवानसों प्रेमयथा जल मीन ॥
प्रेम यथा जल मीन भिन्न कबहूँ नहिं होई ।
काम क्रोध मदलोभ मारि मन पूरा सोई ॥
शिवाराम बिश्राम शुद्ध तहँ अहैसमाधी ।
जोयहि मत सों चले सोई गुरु ज्ञान अगाधी ४

पाहन समविज्ञानमें व्यापै कछु नहिं ताहि।
लोभ मोहसुखकाम रस भूखतृषा नहिं जाहि॥
भूखतृषा नहिं जाहि सदारहिपद अनुरागी।
शून्य शिखर पर चढ़ेउ तबैमन भये बिरागी॥
शिवाराम वहि ठामदेखि भौमग्न शरीरा।
बिसरो जगकी आश हेरि प्रभु त्रिकुटी तीरा ५

(अथ शब्द प्रकरण)

मनतोहि पूजाभेव सिखावो॥ टेक॥ सकल देव अभिअन्तर तेरो तासों नेहलगावो॥ मन तोहि० १ आदि गणेश देखु अभिअन्तर मूलचक्रपरबासा। सेवतताहि बिमलमति जनको तब भौबुद्धिप्रकासा॥ मनतोहि० २ ताऊपर चतुराननबैठे चारोबेद बखाने। धूपदीपनैवेद्यसुरतिकोताहिदेइसनमाने॥ मनतोहि०३ बिष्णुचारि हैअष्टकमलपर मूरतिमधुर सुभाती। फूलेमानसरोवर तहवाँ हँस बैठे एक पांती॥ मन० ४ सूरतिसो तुमनीर आनिके धरो सिंहासनपासा। चन्दन पुष्प पत्रतुलसी को गंध धूपको बासा॥ मन० ५ षटरस भोजन भावभेइ के आनि धरोप्रभु आगे। जेंवतयदुनन्दन जसजनको प्रेमउमग अनुरागे॥ मन० ६ शम्भु देखुतेहि ऊपर बैठे कियेअमंगलरूपा। वहजो कृपाकरे जेहि जनपर दरश देत सब रूपा॥ मन० ७ चक्रएक तहँ देखु पांचयें मया मोहकी खानी। ताहि प्रबोधि सोधि गुरु गमिते जीव आतमा जानी॥ मन तोहि० ८ छठयेंचक्र आदिजग जननी जेहिते जगसुखजानी। ताहिप्रबोधु योगभोगहि ते तबसतयें अनुमानी॥ मन० ९ आगेदेखु निरंजन बैठेनहिं कछुपुण्यनपापा। यहिप्रकारदेवन्हको दरशन तबकरु अजपाजापा॥ मन०१० किये युक्ति यहसाधुसकल सब छूटो भवकोपाशा। पारब्रह्ममों जायमिलोहै गुरुगमि ज्ञानप्रकाशा॥ मन०११

रघुबरनन्द दयाल हुये जबतब मेरोमनभायो। शिवानन्द सत संग रंग मों जिन्ह खोज्यो तिन्ह पायो ॥ मन० १२ ॥

(दूसरा)

सन्तो याजगमों सबदुखिया रामभजो सोसुखिया। रहतअनन्दफन्दनहिं जगकी साहेबदो काभिखिया ॥ सन्तो० १ काहूशोक मोहदुखदीन्हो कोऊधनहीनमलीना। कोऊ बैरभाव निशिबासर कोऊलोभी कोऊदीना ॥ सन्तो० २ राजहि राजकाज बिनुदुखियापरजा प्रेमवियोगी। सुतकलत्रमोंलीन भये सब मोहद्रोह ते रोगी ॥ सन्तो० ३ बादशाहमों बैरभावबहु अपनो अमलबढ़ाई। कामक्रोध मोलीन रहतसोइ नितनित होतलडाई ॥ सन्तो० ४ अंडज उष्मज औ अस्थावर योनि जीव जगकोई। शिवाराम हियेराम नाम बिनु सपनेहु नासुखभोई ॥ सन्तो० ५ ॥

(तीसरा)

सन्तो जोहरिकोयशपान कियोहैताको दुखनहिं ब्यापे। टेक। बढ़ोप्रताप जाहिपर प्रभुको भुवनचतुर्दश कांपे ॥ सन्तो० १ शीतलअमलरहे निशिबासरबैरभावनहिंकोई। मोहमया सबदूरि बिलानी कामसुफलसब होई ॥ सन्तो० २ भेंटोप्रभुहि आपुमों जबहीं तबनानासुखहोई। अनुभव गमितहँ शब्द अनाहद तत्त्व कालबहुहोई ॥ सन्तो० ३ आदिज्योति तहँरहत दिवस निशि शब्दजानसब बोई। हैअविनाशी ताकेऊपरकहाजात नहिंसोई ॥ सन्तो० ४ ब्रह्माविष्णुमहेश कहोनहिं निगमअगम नहिंकोई। अपरम्पार महापुरुषोत्तम अलखकहे सबकोई ॥ सन्तो० ५जाहीते सब सृष्टिभयोहै सृष्टिसकल सोइ बोई। एकते भयो अनेक। रूपहरि एकहि मोंसबकोई ॥ सन्तो० ६ शिवानन्द यहअदबुद कीगति कहाजातनहिं कोई। जिनजस जान्यो तिन तसमान्यो गुरुगमि लेत बिलोई ॥ सन्तो० ७ ॥

(चौथा)

सन्तो रंचकसोयहबडो भयोहै यहअद्‌बुदकी लीला। सूक्षम अस्थुल कहाँलोंबरनों कहँतरिवर कहँशीला ॥ सन्तो ० १ तरिवरमो एकबढ़ई देखो बीज वोहके छोटे । वाही ते बहुशखामूल भवफल अनेकअति मोटे ॥ सन्तो ० २ ऐसोबीज खोजु अभिअन्तर तब जगकी भ्रमछूटे । पलक पलक तेहि छीजनलागे कमल बहुत बिधिफूटे॥ सन्तो ०. ३ तीनोंगुण तीनोंशाखाभों फरै फुलै बिनशाई । वाके हेतु कर्मबश जगमों ब्रह्म रहे अरुभाई ॥ सन्तो ० ४ आतम ब्रह्म ज्योति में बिलसे मरे जीवे नहिंजाई । तेलतत्त्व दीपकमों जबलों बरै ज्योति अधिकाई ॥ सन्तो ० ५ शिवानन्द जगतत्त्व छुटे जब बाती तेल ओराई । भये अंधार घर दीपदेखि अति ज्योति कहाँ चलिजाई ॥ सन्तो रंचकते यह ० ६ ॥

(पांचवाँ)

सन्तो एकनामको बीजा ते भूलिपरा कहुंदूजा १ एकते चार बिचारकरो तुम अण्डज उष्मजजाती । जीवजन्तु अवर अस्थावर रामरमे सबभाँती २ काको निन्दौं काको बन्दौं यह अचरज यकभारी । गणिका और अजामिलकी गति क्यों बैकुण्ठ सिधारी ३ है वह एक तुही करुदूजा अमिवह वेष्य विचारी । कैसे पारहोहुगे आगे दुबिधा दावपसारी ४ मनकरु एक पवनकरु एकै जलथल एकबिचारी। शिवानन्द क्या बहुघरखाये जो नहिंतत्त्व सुधारी ॥ सन्तो एक नामको बीजा ते भूलिपरा ० ५ ॥

(छठवाँ)

बिरिधि तन राम न आवतुहो । लोकलाज बहुकाज जक्तमों सबही सिखावतुहो १ यहमेरो बुनिआदि आदिकरु मुद्रादेइलयो। दुर्जन दवागीर नहिंतेरो यहसब मोहिंकियो २ खतखतूत सब देत बादिकहि सरस सिवान देखायो। आपुगयो शठ बैरभाव महँ

यहपथ सबहिं चलायो ३ समुभि न परे अचेत मोहबश काको कवन भयोहै। सकल सम्पदा साजबाज सुख कोलै संगगयोहै ४ नामबिना नरकाम व्यर्थ सब बादिहि जन्मगयो है। शिवानन्द शरणागत गुरुको सो भवपार भयोहै ५॥

(सातवाँ)

रामके यश फैलिरही जगमाया। कहिं चेतन कहुँ मूढ़ मवन हैं कहुँ ह्वै दासकहाया १ कहुँ नांचत कहुँ तालबजावत कहुँ सुरागहोइ गाया। कहुँ तापस कहुँ मुनि बिज्ञानी कहुँ कोउ ध्यान लगाया २ कहुँ राव कहुँ रंक शंकह्वै कहिं निशंक होइजाया। कहुँ मारत कहुँ मरत आपुही कहुँ दयाल दिलआया ३ शिवानन्द यह अद्भुतलीला गुरुप्रसाद गमिपाया। भावभक्ति भगवान प्रगटभो निश्चय मनठहराया ४॥

(आठवाँ)

सन्तो ऐसो कामबिचारो। भवसागर हंसउबारो १ कर्म भर्म करुदूजा। हियहेरु मानसीपूजा २ तब मानस पूजासोई। जब अनुभव गमि कछुहोई ३ काम क्रोध रिपुमारो। तब दयाशब्द निरुवारो ४ जब शब्दे शब्द मेरावा। तब नामसो नेह लगावा ५ जब नामनेह भौनीको। तब और स्वाद सबफीको ६ जब पूरा गुरु नरपावै। तब शिवानन्द मनभावै ७॥

(नववाँ)

सन्तो निर्गुणरूप बिचारो। जिन सकलजक्त करिडारो १ है वह निर्गुण निराकार गति अगुणरूप कहुकैसे। इच्छासे तुम सर्गुणदेखो आपु निरन्तर वैसे २ सन्तति वाकहँ भर्म न व्यापे जातिपाँति नहिं थापी। पाप पुण्यसों रहत नियारो जग सब मायाव्यापी ३ है निर्बैर भावनहिं दूजा एक पुरुष अबिनासी। वाकी गति खोजन सबलागे कवि कोविद संन्यासी ४ शिव विरंचि जिन्ह पारनपावहिं करिबिचार बहुहारो। दृष्टिमुष्टि नहिं

रंग रूपकछु ऐसोनाह हमारो ५ कहौं कहांलगि तिनकी महिमा सन्तन कछु निरुआरो। जससमीप तस सातस्वर्गले यहमन ज्ञानसँभारो ६ शिवाराम सन्तनकी महिमा मोसनकहीनजाई। कायरकूरकपूत मूढ़शठ ताकहँभक्तिदृढाई ७ ॥

(दशवाँ)

योग युक्ति कछुनेम धर्मनहिं नहिंतीरथ अस्थाना। दानदयो नहिं नामलयो नहिं साधुसंगति नहिंजाना. १ केहिप्रकार भवसागर उतरौ मनमों करौनिदाना। नामनेह जिय निश्चयलागी कोपचिमरै भुलाना २ चाहेनरक स्वर्ग करिडारे स्वर्गनरकते हीना। यहमहिमा वाकोदेखो तुम शिवानन्द भौलीना ३॥

(ग्यारहवाँ)

यहमन अनामिल मीलई रेभाई। कहत सुनत देखि नहिं पतिआई १ स्वारथरत मनरहु अरुझाई। परमारथ पथ कबहुं न धाई २ कामक्रोध दुओ धनुषचढ़ाई। मोह द्रोह की फौज सजाई ३ यहरँगराते निशिदिन धाई। राम रमापति कबहुं न गाई ४ यहसब मतसाचे ठहराई। भक्तिकरौ भवभार नशाई ५ रघुवरजी गुरुयुक्ति बताई। सत्यनाम तेरहु लपिटाई ६ शिवानन्द यहज्ञान लखाई। जीव दयाबिन पार न पाई ७॥

(बारहवाँ)

अबमन.रामलगोरेभाई। बूझिपरी जगकी चतुराई १ स्वारथ लगिबहुनेहबढ़ावत मातुपिता परिजन सबभाई। बामकाम बशकेलिकरनहित बहुतभाँतिराखो अपनाई २सुतकलत्र करतूति देखिके एजीव सदारहे लपिटाई। चौरासीके फाँस सकल यह जो गुरुमिले तो लेतछुड़ाई ३ छुटो अजामिल ग्राह गिद्ध गज शबरी सदनकसाई। सूपच औ रविदास नामजपि चढ़े बिमान निशान बजाई ४ रघुवर नन्द अनन्द होइ के युक्ति दयाकरि

दीन्ह बताई । शिवाराम सरबज्ञ राममय जानत जरामरन मिटिजाई ५ ॥

(तेरहवाँ)

कयागति कौनकहै छबिगाई। कोईगुरुगमि अलखलखाई १ मूलगणेश लिंगबिच ब्रह्मा नाभीविष्णु कहावे। उरउतम्न सो शम्भु जानिले बिनुगुरुगमि नहिंपावे २ कएठज्ञान अज्ञान कहत सब रसनाजानुभवानी। नीरंभवनमो बसत निरंजन केहिप्रकार तेहिजानी ३ शिवानन्द सतसंग नेहकरु वहसब युक्तिलखावै। पारब्रह्म पुरुषोत्तमकी छबि हियेआनि दरशावै ४ ॥

(चौदहवाँ)

सन्तो भवसागर बड़भारी । लेहुबिचारि बिबेकबुद्धि सों जो गुरुपन्थसुधारी १ चारिबेद चारों मतभापत पटहैंशास्त्रबिचारी। खोजेउ सकलपुराणअठारह अवरो बड़होनिहारी २ जबलौंसबहि एकनहिं जानत बूड़ेबहुत अचारी। करहिंदम्भ बहुनेह बढ़ावत पूजा आसनमारी ३ करिकलेश पावहिं सुखथोड़े मृगतृष्णा संसारी। फीरत बिकल प्यासजातेनहिं घटमों अमिय बिसारी ४ नामंजहाज ज्ञान केवटकरु कनहरकयातिहारी । मनहै पवन ताहिधरि जोतो तब सुरलोक निहारी ५ जोहैं पतितहुयेजो आगे तामें रेखहमारी।शिवाराम बेकाम सबैबिधि आयेशरणतिहारी६॥

(पन्द्रहवाँ)

हमारे गुरु निर्गुण नेहदयो । जोदेखो संसार जीवसब एक अखंडभयो १ हैसाहेब अभिअन्तर तेरो तासोंसुरंति लयो। भयउमग्नवहरूप बिलोकत पूरणप्रेमपयो २ शब्दअनाहद जाहद नाहीं सुनत अनन्दभयो। उमड़ी तरणितनया अरु गंगा ज्ञानकी लहरिमयो ३ मंजनकीन्ह त्रिबेणी संगम आतमराम पयो ६ परम पुरुषपुरुषोत्तम जहँवाँ तहँलैब्रह्मगयो ४ जिन्ह घट शोधो अरु

मनबोधो तिन्हवहरूपपयो। शिवाराम बिश्राम ज्योनिसों सोभव पारगयो ५॥

(सोलहवाँ)

पड़ाइनिपूरणप्रेम करो। हरिगुनगाउलाउ हरिसों लवनाहीं तो जन्मगयो १ नाह निरंजन आतमके बशफीरत बिकलभये। बिनुगुरुज्ञान चेतनहिं अन्तर गृह गृह दान लये २ छांडु सकल जंजाल जक्तको अब मेरो कहाकरो। सुखस्वारथ परिवार प्रेम बश यमके हाथपरो ३ चितचंचल तेहि थीरधीरकरु त्रिकुटीतीर गहो। शिवाराम यहकाम बिचारत प्रभुपद नेहलहो ४॥

(सत्रहवाँ)

झोंझाइनि अरुझिरहो वहिओर। शुन्य शिखर परतत्त्वबिचारोजहँप्रीतम बसेतोर १ सुतबित सुखसंसार सकल यहकबहींन थीरलये। घटतबढ़त घटिजात छिनुकमें चंचलचपलनये २ अरुझतअरुझत सरुझिगयोहै सुखसागरके जोर। ऊर्द्धउन्मुनी घाटसुधारत चहुँदिशिभयउ अजोर ३ जहँअरुझे शिव अरुसनकादिक ब्रह्माशक्ति भलो। शिवाराम बिश्रामभूमितहँ संशयसकल मलो ४॥

(अठारहवाँ)

तिवराइनिचरखाचींतधरो। चलतरहत दिनराति पलहिपल क्षणएक थीरकरो १ इंगलापिंगला सुखमनिकी गति डोरी तार गहो। सूतलपेटु सुरतिउलटी करि प्रीतममोल कहो २ रजगुण तमगुण सतगुण येसब तोला जाइ चढ़ो। पिउनि पचीसमाल्ह मनतेरो तब थियपूरिकढ़ो ३ पूरण प्रेमपयो प्रीतमसँग जहँदुख दोष हनो। शिवानन्द अगुआगुरु पूरो बानक तबहिंबनो ४॥

(उन्नीसवाँ)

दुबइनि दुर्मतिदूरि करो। रामनाम गुनगाउबावरी भवसागर उबरो १ दुर्मतिद्रोह देत सबकाहू सुरनर असुरठगो। ल-

लकिलगत लवनहुँले मीठे गुरुगमि दूरिभगो २ दुर्मतिबशसीता जगदम्बा पिय ताको रेखलँघो । हरि दशकंध बिबिधदुख दीन्हो तेहिहेतु रामबधो ३ दुर्मति बशहरिणाकुश सुतको बहुबिधित्रास दयो । भक्ति हेतु प्रभुखंभ फारिके नखहति प्राणलयो ४ दुर्मति बश यदुनन्दनते शठ हठ कछु कंस कियो । ताहि मारिकै नारि लियो सब सोरह सहस कयो ५ शिवानन्द यह तत्त्वसारते एका एक भयो । दुबा दुबाइनि नेहलगावत बनीबात नशयो ६ ॥

(बीसवाँ)

चौबाइनि चिन्ता सकलतजो । चिन्तामणि चितचेतु सबेरे गोकुलनाथ भजो १ जिन्हगायो गुण गोबिंदजूके सों निश्चिन्त भयो । ध्रुव प्रहलाद बिभीषणकी गति निर्भय राजदयो २ जेहि चेते सब चिन्तामीटे सो तेरे हियपरहो । शिवानन्द चिन्ता मेटे सब निश्चय नामगहो ३ ॥

(इक्कीसवाँ)

मिसिराइनि मिलनजाहु वहिओर । मानगुमान बिसारु बावरी कहा मानु कछुमोर १ कामक्रोध मदमोह लोभवश सब सों द्रोहकियो। एक राममय जानु सकलजग तबतेरो कामभयो २ खोलु किवाड़ खसम अभिअन्तर सूरति डोरिलहो । शिवाराम मन मानभई तब जब हरिनामगहो ३ ॥

(बाईसवाँ)

पठकाइनि पूजापाठकरो । पुरुष पुराण महापुरुषोत्तम सो तेरो हृदयधरो १ प्रेमपत्रलै चित चन्दनकरु होरिसा हिये सुधारो। घिसत घिसत घहरात गगनमों तब घनश्याम निहारो २ देखि बदन मन मगनभयो तब को करिसकै बिचारो । शिवाराम यह काम कठिन है पाठक पढ़ि पढ़ि हारो ३ ॥

(तेईसवाँ)

सुकुलाइनि उज्ज्वल काम तिहारो । धोवोध्यान गुरुज्ञानकु-

गढमों जगसों रहो निआरो १ धोती धरम क्षमा अनुशासे पोथी प्रेमपढ़ावो। माला मनफेरो अभिअन्तर सुरपुर सुरति चढ़ावो २ यहिप्रकार धोवे जो प्राणी निश्चय नेहलहावे। मान मोह मद मारि ध्यानगति शिवानन्द निर्बाहे ३ ॥

(चौबीसवाँ)

मलाहिनि ममता माछुरिमारो। जालपसारु ख्याल सन्तन की योग अग्नि धरिजारो १ मनमगुरी सौरीहै सूरति रोहू राह निकारो । धवई ध्यानकी सारीपैठो ऐसोकाम बिचारो २ हिया हरदी नोन करुनामय तेल तत्त्वले रांधो। शिवानन्द गुरुज्ञान रंगमों मोह मलाहिनि बांधो ३ ॥

(पच्चीसवाँ)

मीसिर ममता मोहतजो। अन्तदांव कोउ काम न ऐहै सीतारामभजो १ मोह द्रोह दुखदेत सबनको देखो चरित भयो। रावण कंस निवंशभयो सब छलबल बहुत कियो २ चाहतजगत सकल स्वारथ सुख परमारथ नचहो। परमारथ बिनु पंथ कबहिं नहिं यमपुर बास भयो ३ जीवदया उरआनि निरन्तर गुरु के चरणगहो। शिवाराम सबकामबने तब जबहरिनामकहो४॥

(छब्बीसवाँ)

उपधाइनि ऊपर दृष्टिकरो। जगतजात गुरुज्ञानगम्य बिनुफिरि भवकूपपरो १ मोहनिशा में सोयगँवायो चेत न कछुक कियो। नरतन भवबारिधिकहँ बेरो सोतुम काटिदियो २ जबगुनिया गूननको पावे तब पुनि बहुरिबिलो। शिवाराम सुखधाम नामको खिलो अखिल खिलो ३ ॥

(सत्ताईसवाँ)

पाठकपरलोकके कामकरो । लोककाम बेकाम सकलतजु गुरगामि ध्यानधरो १ धीरजधरु गुरुज्ञान गम्यकरु कोतुम कौन भयो। पूरणब्रह्म चेतु अभिअन्तर मूरुखजन्म गयो २ दयाधर्म

दिलभतिर आनो तबप्रभु प्रगटभयो। शिवानन्द आपुहि चीन्हो जिन्ह संशय सकलगयो ३ ॥

(अट्ठाईसवां)

दिक्षिताइनि दायाधर्मकरो। दायानादरवत दिलभीतर पूजा हियेकरो १ जीवआत्मा जहँलगि देखो तामों आपुरहो। प्रेमहि प्रगटभयो पुरुषोत्तम आगम निगमकहो २ सेवतसन्त अन्त सब पावत आपुहि आपुभयो। शिवानन्द गुरु ज्ञान गम्यते संशय सकलगयो ३ ॥

(उन्तीसवां)

कुंवराइनि कुलकी लाजकरो। कहु करताकर नामें हियमों एकसे एकतरो १ कयाकर्म ते आये भवमें नरतनसरस बडो। साधनते सब सिद्धि होतुहै प्रभु बलिद्वारखडो २ कयाखोजु करतार मिलेंगे सबको कुशलमयो। शिवानन्द कुंवराइनि कुललै करतापास गयो ३ ॥

(तीसवां)

रउताइनि काहेन रामकहो। रामकहत गजगिद्ध अजामिल. गणिका गज निबहो १ रामकहत प्रह्लाद बिभीषण ध्रुवजपि राजचह्यो। अचल अमरपद ताकहँदीन्हाचारोवेद कह्यो २ जपतनाम जसचाहभयोहै तवनिहि ओरगयो। शिवानन्द जगचाहमिटे जब तब महि जन्मभयो ३ ॥

(इकतीसवां)

ओझा अजहुं चेतु गुरुज्ञान। काम क्रोध मद लोभ मारुरिपु करु अन्तरगति ध्यान १ धीरज धर्म ध्यान गोबिंदको मोहमान चितत्याग। रामरूप सब देखु जक्तमों प्रेम नेमते पाग २ सब स्वरूप सबमों सबव्यापक जानत सन्त सुजान। शिवाराम गुरु ज्ञान सुरतिकरु मीटे सकल गुमान ३ ॥

(बत्तीसवां)

भागीरथीहै तू मेरो गतितेरो १ नीर तीर मुनिध्यानलगावत करत समीप बसेरो। लहरि तरंग समीप सुहावनि देउ मगन मन मेरो २ जो यशगावत सोफल पावत भवसागर कहँ बेरो। पापी अनेक तरे क्षणही मो नेकु दृष्टि करि हेरो ३ मातु पिता सुत सहित नारि पुनि रघुबरजी गुरु मोरो। राखु शरण जन जानि आपनो शिव जो करत निहोरो ४॥

(तैंतीसवां)

भजनते मनमेरो लपटाई १ काहुहिदीन्ह बहुतविधि सम्पति काहुहि दुखं अधिकाई। तुरय अनेक वाजि गज बहु रथ महल सुवेष बनाई २ कोई बनहि तपसाधि रह्यो है कन्दमूल फल खाई। कोई जन समुझि रहत घट भीतर नामतेरो लवलाई ३ सन्त जो होत तिनहि गुन तुमरे बिषइनि बिषयसुहाई। शिवा-नन्द शरणागत आये राखु शरणयदुराई ४॥

(चौंतीसवां)

मोहिं अस पतित शरण प्रभु तुम्हरे चरणकमल ताकि आये हो। सुन्दर सुभग स्वरूप सोहावनि पीत बसन मनभाये हो १ संगलिये खेलत यदुनायक राखे अति मनभाये हो। जहँ जन दुखितरहत तहँ धावत कूबरि के कुबर मेटायेहो २ कंस बिध्वंस कियो क्षणहीमों बसुदेव अतिसुखपायेहो। ऐसोप्रभु जनके सुख-दायक शिवानन्द मनभाये हो ३॥

(पैंतीसवाँ)

ऐमनमूढ़ भजो तू रामहि सुख सम्पति अधिकाईहो १ गीध अजामिल गणिकहि तार्‍यो द्रौपदी चीर बढ़ाईहो। जनकपरण हरण परदायक शीवपरम सुखपाईहो २ शिला तरी है चरण गहि जिनके दशरथ कुल मनभायेहो। आपु देवहित बिपिन गमन करि केकयि दोष लगायेहो ३ पापी अनेक तर्‍यो क्षणही

मों अब बिलम्बका लायेहो। रघुबरजी गुरुचरण मनावत शिवानन्द शुचिपाये हो ४॥

(छत्तीसवाँ)

ऐप्रभु पावननामतिहारो कहँलगि करो बिचारो १ पतितकहाँ भिलनी कीरति बनफल प्रेमहि खायो। चखिमीठो फल पुत्र हेतु धरि ताकहँ दरशदिखायो २ बेदबिदित द्विज बडोअजामिल प्रभुलगि लाज गँवायो। सुराप्रान वेश्यासँग रहियत तेहि बैकुंठ पठायो ३ सूपच सुराति लाय प्रभुके यह जातिकर्म सब खायो। वह पंडित ज्ञानी पांडवगृह बिरद बडाई पायो ४ गणिका गज तन ऊँच नीच जन सबसों अंग दिखायो। सूरति बाधि मिली प्रभुके पहँ जगकहे सूगा पढ़ायो ५ गजराजहि जब ग्राह लयो धरि पछिलो बैर सँभारो। प्रभुसुमिरो जलअगमगयो जब थल तहँ ताहि पवारो ६ इनसबकी करनी पिछली कछु प्रभु करि कृपानिहारो। युक्ति बाधि सब मुक्ति भयो है वेद उक्तहै सारो ७ राज काज जग लागिरहे सबस्वारथ साँच पियारो। शिवानन्द शरणागत आये राखतनाथ हमारो ८॥

(सैंतीसवाँ)

मेरोमनराम नामलवलागा। तातेअनहद धुनिसुनिलागा १ कामक्रोध मदमोह लोभवश आपुन चेरि अभागा। कया कर्मतें यहतनपाया सकलपदारथभागा २ गुरुगमि जानहिं सुखबहु मानहिं मेटत जक्तकोरागा। अष्टकमलके मध्यज्योतिहै कहांकहों अतिभागा ३ शिवाराम सुखधामनामहै वाकी गति अनुरागा। रहतसमीप सदाजल थलमों यहगति काहुहिंलागा ४॥

(अड़तीसवाँ)

सन्तो है दयालगुरुमेरो। मोहिं दीन्हअभयपद डेरो १ क्षमा शीलसन्तोष प्रेमरत काम क्रोध भौ जेरो। झलकतचन्द अनन्द भयोहिय बरिसत नीरदरेरो २ श्वेत अरुणकछु पीतकमल है

श्यामबहुत झलकेरो। ताहिमध्य अद्भुतछवि देख्यो जबगुरु भौंह तरेरो ३ भयोअजोर छूटिभ्रम तनकी सहज शुन्यमनहेरो। महाशुन्यगुरु दरशनपाये उतरयोपार सबेरो ४ शिवाराम बिश्राम नामसों तजुइरषाजग केरो। जिन चारूयोतिन स्वादजानलिन्ह अनचाखे पर घेरो ५॥

(उन्तालीसवाँ)

एमूरतिदेखोमनुआहो १ जलमोंथलमों जीवजन्तुमोंनभमोंर-हतसमाई। जहँबिलोकु तहँ सबमोंदेखो अद्भुत कह्योनजाई २ अंडज उपमजअरु अस्थावर जायनजीव जहाँते। लखचौरासी कहों कहाँलों सबमों प्रभुहैं माते ३ अखिललोक मों बासप्रभूको नरतनमों कोउ पावै। जोगुरुज्ञान थीर अभिअन्तर सतगुरु भेदलखावै ४ निर्मलनीर भवनमों राजित पाँचो तत्त्वजहाँते। शिवानन्द गुण तीनि पचीसो लेखाकरौं कहाँते ५॥

(चालीसवाँ)

सूरतिकरुमनुआगुरुज्ञान १ इंगल शोधि पिंगलाशोधो सुखमनिनेह लगावो। बंकनालगहि ऊपरदेखो मुरलीशब्दसुनावो २ बाजतबीण बांसुरी किन्नरि महुअरि अरुमुरचंगा। देखिदृष्टिभ्रमति लखित सोहावनि बहतयमुन अरु गंगा ३ श्यामसुँदर मुरलीधरदेखो मेरुदण्डगहिमूला। सहसपाखुरीलगीललितजहँ ऐसो अद्भुतफूला ४ जोसाहिब सोंसांचे होइके निश्चय नेह लगावै। शिवानन्दगुरुज्ञान गम्यते अनहद नाद बजावै ५॥

(इकतालीसवां)

गोपालेभंजु जीवनहै जगथोर १ बारहवर्ष बालपनबीतोयुवा जोममोंराती। नाहरि भजन न योगयुक्ति कछुऐसो सबदिनजाती २ यहमाया ममताके कारण बादिह जन्मगँवावै। कर्म भर्म जर्म फांसभयो है फिरि फिरि भवजलआवै ३ नामनेह करुदेह गेहन्निच सहज सरूप बनावे। दृष्टिथांभु भृकुटीके ऊपर पारब्रह्म

झलकावै ४ जीव पीवमहँ एकभयो जब सकल शोच बिसरावै। शिवानन्द यह अद्भुत लीला गुरुबिन कौन लखावै ५॥

(बसन्त)

(पहिला)

तुम क्योंनभजो मन रामनाम। तजहु सकलगृहकाम धाम १ जेहिं सुमिरे सब सुखके मूल। तिन्हेंछांड़ि कहां तें रहसि भूल॥ कलिमलहरणजोरेभाय। ठाकुरहैमेरो कोशलकेराय २ कुम्भकरण घननादमारि। रावण सकलसाखा बिदारि॥ दीन्हे सबै प्रभु निजअधाम। देवदनुजहित भयोहै काम ३ हिरणाकुश नख वोद्रफारि। जन प्रहलादहि लियो उबारि॥ रघुवीर गुरूजी भयो दयाल। शिवाराम गति नन्दलाल ४॥

(दूसरा)

जन्मे श्रीरामजु भौअनन्द। गावहिंसकलमुनि जैगोविन्द १ गावत सकल अवधकी नारि। रघु दिलीप दशरथ बिचारि॥ धन्य कोशला भई सनाथ। जहँ जन्मलियो त्रैलोकनाथ २ बाजत ढोल मृदंगताल। किन्नरिमहुअरि बिनरसाल। बैठे गंधर्ब गावैं सुतान। सुरपति देखहिं चढ़िबिमान ३ बंदीजनकहि मांगहिं सुदान। नाचहिं अप्सरा अति सुतान। जेहि जवनभाव सो-सकल लेहु। शिवराम प्रभु तुम दरशदेहु ४॥

(तीसरा)

होतेबहुरंग जनककेधाम। गावहिं सकल सीताहि औराम १ होते पुरशोभा कहिनजाय। कोटिन्ह मनमथ तहँ रह लोभाय॥ दुल्हराम शोभाके खानि। तेहिउपमा कसकहौं बखानि २ कहुं अति मधुर बाजनेबाज। कहुंगावहिं सखि अति करि समाज॥ द्विज बैठि कहूं करिरहे बिचार। बोलहिं देव मुनि जैजैकार ३ आरति सकल सवारिलीन्ह। परिछन गाय रामहिंको कीन्ह॥ लोचन सुफल सब करहिंजाय। चन्द्ररेख बिधि धरबनाय ४ सु:

भगसिंहासन आसनदीन्ह। सीतहिराम करजोरिकीन्हि ॥ सकलमुनि बेदेउचारि। पूजे गौरि गणेशहि बिचारि ५ कन्यादान जनक जो दीन्ह। तेहि स्वस्तिपढ़ि रामहि लैलीन्ह ॥ सुमन वृष्टि नभ देवनलाव। शिवानन्द गुण हरिकोगाव ६ ॥

दो०। जोआयो अनुमानते गुरुआज्ञा धरिशिश।
शिवानन्द यह बिरचेऊ स्थान देहिं जगदीश १
ग्रहद्वीगुण बसु अर्द्धशशि रसतिथि फाल्गुणमास।
शुक्लपक्ष अति शुचि निरखि कियोग्रंथ शिवदास २

इतिश्रीशिवानन्दबिरचितायांब्रह्मज्ञानादिअगुणनिरूपणनामकथासमाप्तः ॥

दो०। सुभग एकग्रह वेदबसु ऋतु पावस हियआन।
कर्क अर्कगत अंशनख शशिदिन समुभ सुजान १
यहपुस्तक लिखि निर्मयो बख्शराम करजोर।
मुद्रित हित दीन्हेगयो मुन्शी नवलकिशोर २

इतिशिवारामसरोजसमाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी
सितम्बर सन् १८९१ ई० ॥

भूमिका

उस सर्वशक्तिमान् कृपानिधान परम पुरुष अविनाशी घट घटवासी को अनेकानेक धन्यवाद देनेके पश्चात् विदित होकि यह छोटीसीपुस्तक (शिवारामसरोज) महात्मा शिवाराम रचित जोकि विक्रमार्क सम्वत् १८४२ में उक्तमहाशयने बनायेथे। येमहाशयखास इसीग्रामके रहनेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मणजोकि सम्वत् १८४६ मेंमरे जैसाकि यह निम्नदोहा लिखाहै ॥दो० ॥ "अवदएकवसुवेदरस माघवदीसोमवार। हरितिथिगंगाके निकट शिवानन्दभवपार १ भृगुआश्रमके पूर्वदिशिपंचकोशपरिमान। हरदिग्रामहरिनामजपि शिवानन्दसुरधाम "२ इनका नाम इस जिलाके कईएक स्थानमें प्रचलितथा—इनकी प्रशंसा सुनकर हमारे महाराज साहिब बहुतसुचितसे इनकी बनाईहुई पुस्तकोंको तलाशकरवाया पर मिहनत बेकाम हुआ अन्तमें सिर्फ यह छोटीसी पुस्तक हाथलगी खैर "भूखेसेआधेपेटभला" समझकरउल्थाकरवाया आशाहै कि अगरइसकी वहबड़ीबड़ी पुस्तकें बनाईहुई हाथलगगई और प्रकाश होगया तो आगेके महात्माओं से इनकी कविताई यासिद्धताई कम न जाहिरहोगी?

(आपलोगोंका चरणसेवक)
पण्डित बख्शराम पांडे सा०
हल्दी जिला बलिया

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्रका सर्व्व विद्यानिधान अर्जुन को परम अधिकारी जान के हृदयजानित मोहनाशार्थ भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर करायाहै वहीउक्त भगवद्गीता वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्तार अपनी बुद्धिसे पारनहींपासक्के तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठनकरनेकी सामर्थ्य है वहकबइसके अन्तराभिप्रायकोजानसक्केहैं औरयहप्रत्यक्षहीहै किजबतक किसी पुस्तक अथवा किसीवस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्त्थ सन्ततधर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्वविद्याविलासी भगवद्भक्तअनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोर सी, आई, ई ने बहुतसाधन व्ययकर फर्रुखाबाद निवासि स्वर्गबासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तकको श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषामें तिलकरचाय नवलभाष्य आख्य सें प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुष भी जानसक्के हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह विचारहुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उससमयपर होगी कि इस शंकराचार्य्यकृतभाष्य भाषाकेसाथ और इसग्रन्थकेटीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उनटीकाकारोंके अभिप्रायका भी बोधहोवे इसकारणसे श्रीस्वामी शंकराचार्यजीकी शंकरभाष्यकातिलकव श्रीआनन्दगिरिकृततिलकअरु श्रीधरस्वामिकृततिलकभी मूलश्लोकोंसहित इसपुस्तकमें उपस्थितहै ॥